कहानी - पुरानी चादर

आज इतने सालों बाद चाची ने जैसे ही, वही पुरानी चादर का जिक्र किया तो मधु के सामने 23 साल पुरानी कटु याद ताजा हो गई।

वह वही चादर थी जिसकी वजह से मधु मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गई थी। बात यह है कि जैसे ही मधु ने ग्रेजुएशन पूरा किया , मधु की मां को उसकी शादी की चिंता सताने लगी। उन्होंने मधु की शादी की चर्चा सबसे करना शुरू कर दिया।

मां ने मधु की चाची से भी यह जिक्र किया। अब मधु की चाची भी तो थी पुराने जमाने की , उन्होंने मां को सलाह देते हुए कहा की रिश्ता करने के पहले कुछ सिलाई कढ़ाई कर मेजपोश , चादर आदि तैयार कराना बहुत जरूरी है। ससुराल में सास, जेठानी सब यही देखेंगीं और तारीफ भी करेंगीं , कहेंगी लड़की बहुत गुणी है। बस फिर क्या था, मां चाची के साथ बाजार जाकर हल्के हरे रंग का डिजाइन बना हुआ चादर ले आई।

अब वह चादर क्या आया, दिन रात मधु के ऊपर चादर काढ़ने का दबाव डाला जाता।

मधु सोचती क्या चादर काढ़ना ही सब कुछ है। उसी कढ़ी चादर से ही केवल प्रशंसा होगी। उसकी एजुकेशन , उसकी अपनी हॉबी का कोई मतलब ही नहीं है।

यही सब सोच मधु शादी को व्यर्थ समझने लगी। मधु अपनी मां से खींझ कर कहती - मुझे नहीं करनी शादी-वादी, जहां बस एक कढ़ा हुआ चादर ही देखा जाएं और सब उसी से आपको जज करें, ऐसी जगह मुझे नहीं जाना।

मधु की मां बेटी की भावनाओं को ना समझकर, उस पर पुनः चादर काढ़ने का दबाव डालने लगीं। मधु इतना दबाव सह ना सकी और मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गई। आनन फानन में उसे मनोचिकित्सक को दिखाया गया।

कुछ महीने दवाई करने के बाद मधु अब ठीक हो चुकी थी।

मधु की मां ने देखा की मधु ठीक हो रही है तो तुरंत उसका रिश्ता भी तय कर दिया ।खैर शादी तो हो गई परंतु शादी के बाद मधु के मन में चादर न काढ़ने का जो डर कहीं बैठा था, वह तो ससुराल पहुंचते ही जैसे उड़न छू हो गया।

मधु को कविताएं ,कहानियां लिखने का शौक था। मायके में तो मधु के इस शौक पर सब हंसते थे, उसका मजाक बनाते थे। परंतु ससुराल में मधु के आदरणीय ससुर जी को मधु के शौक के बारे में पता चला तो बड़े प्यार व अपनेपन से मधु से बोले - बेटा तुम्हारा शौक बहुत अच्छा है। बोलते तो सब है पर जब लफ्जों को कागज पर उतारने की बारी आती है तो कोई कुछ नहीं कर पाता। बेटा! तुम एक डायरी बना लो, इस पर अपनी कविता लिखा करो और हां कविता खत्म करने के बाद दिनांक और दिन लिखना ना भूलना।

मधु के ससुर जी ने इतने हक से कहा की मधु को तो मानो पंख ही लग गए। वह खुले गगन की एक आजाद पक्षी सी बन गई। वह अपनी भावनाओं को कविता के रूप में व्यक्त करती और डायरी में लिखकर अपने ससुर जी को पहले पढ़ाती। कभी-कभी तो ससुर जी कोई कविता पढ़ कर इतने भावुक हो जाते की मधु को तुरंत प्रोत्साहित कर सौ रुपए थमा देते। ₹100 ही पाकर मधु को लगता जैसे दुनिया की सारी दौलत मिल गई हो।

आज 23 साल बाद चाची ने जब वही पुरानी चादर का जिक्र किया तो मधु ने हंसते हुए कहा - चाची इस चादर को आप अपने पास ही रखिए। यह अब एक पुराना भूला अतीत है । मेरे किसी काम का नही।

देखा जाए तो आज हर इंसान स्वतंत्र है। सबके अपने-अपने शौक होते हैं। कभी किसी को इतना भी बाध्य ना कर दे कि वह अपनी वास्तविक पहचान ही खो दें।

अपने मन के इच्छित शौक को पूरा कर इंसान प्रसन्नता का अनुभव करता है। वही प्रसन्न इंसान अपने परिवार व अपने समाज को खुशहाल बनाता है ।।

- मीनू अग्रवाल , वाराणसी